दैनिक जागरण
3-11-15

983/928

मुश्किल में खेती : कृषि सांख्यिकी, अभियांत्रिकी, गृह विज्ञान और जैव रसायन प्रभावित

वैज्ञानिकों की किल्लत से जूझ रहा कृषि क्षेत्र

सुरेंद्र प्रसाद सिंह, नई दिल्ली

- मांग व आपूर्ति का बढ़ता जा रहा अंतर, प्रयास हो रहे नाकाफी
- संसद की स्थायी समिति ने भी जताई इस मुद्दे पर गंभीर चिंता

केंद्र सरकार की उच्च प्राथमिकताओं में खेती व खेतिहर शुमार होने के बावजूद कृषि क्षेत्र मानव संसाधन की भारी कमी से हलकान है। कृषि वैज्ञानिकों की जबर्दस्त किल्लत से कृषि और इससे जुड़े क्षेत्रों की हालत पस्त है। कृषि वैज्ञानिकों के स्वीकृत पदों में भी एक हजार से अधिक पद रिक्त चल रहे हैं, जिसके लिए उपयुक्त लोग नहीं मिल पा रहे हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) के लगभग एक सौ संस्थानों में से एक दर्जन से अधिक निदेशकों के पद खाली हैं। इनमें वैज्ञानिकों के स्वीकृत पदों को भरना कठिन हो गया है। कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के सूत्रों के अनुसार सबसे बड़ा संकट कृषि सांख्यिकी, कृषि अभियांत्रिकी, डेयरी अभियांत्रिकी और बायो रसायन के क्षेत्र में है। कुल 55 विभिन्न विषयों में से आधा दर्जन ऐसे हैं, जिनके लिए कुशल मानव संसाधन उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं। जबकि कृषि वैज्ञानिकों की नियुक्तियों के लिए केंद्रीय कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (एएसआरबी) का गठन किया गया है। बार-बार के विज्ञापन के बावजूद उपयुक्त नियुक्तियां नहीं हो पा रही हैं। कृषि शिक्षा में प्रगति न होने की वजह से हालात खराब हो रहे हैं। कृषि संस्थानों में वैज्ञानिकों और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्तियां न हो पाने से अनुसंधान कार्य प्रभावित हो रहा है। मंत्रालय से संबंधित संसदीय समिति ने इस पर हैरानी जताई है। आईसीएआर के संस्थानों में डेढ़ हजार वैज्ञानिकों के पद खाली हैं, जबकि 1300 से अधिक तकनीकी रिक्तियां हैं। नौ सौ प्रशासनिक श्रेणी के पद खाली हैं। आइसीएआर के चार मानद विवि, आईएआरआई, सीआईएफई, आईवीआरआई और एनडीआरआई के अलावा देश के शीर्ष 10 कृषि विश्वविद्यालयों से ही सक्षम व कुशल वैज्ञानिक निकल रहे हैं। जबकि जरूरत कहीं अधिक है। राज्यों में स्थित कृषि विवि से निकलने वाले युवा वैज्ञानिकों का स्तर इतना खराब है कि वे निर्धारित नियुक्ति परीक्षाओं को पास नहीं कर पाते हैं। होने वाली कुल नियुक्तियों में सामान्य विश्वविद्यालयों के छात्रों की हिस्सेदारी छह-सात फीसद से अधिक नहीं हो पा रही है। वैज्ञानिकों की सबसे अधिक कमी बागवानी, पशु विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और अभियांत्रिकी में है।

[signature] 3/11/15
प्रभारी, समाचार पत्र अनु.

1. निजी सचिव, निदेशक, भा० कृ० अ० सं०
2. " संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) "
3. " संयुक्त निदेशक (प्रसार) "
4. " " (शिक्षा)
5. प्रभारी, पी० पी० आर०
6. प्रभारी कैटेट
7. प्रभारी AKMU